DOI: 10.51220/hjssh.v7i1.4
Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 7 pp.29 - 31, December, 2012, ISSN. 0975 - 9891

पद्म पुराण में पुष्कर तीर्थ का माहात्म्य

कुसुम डोबरियाल एवं जे0 के0 गोदियाल
संस्कृत विभाग
हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Received: 12-11-2012 **Revised: 19-11-2012** **Accepted: 27-12-2012**

ABSTRACT

भारतवर्ष एक धर्मप्रधान देश है। यहाँ की धरती का एक-एक कण महत्वपूर्ण है। यूँ तो संसार के देशों में अनेक तीर्थ स्थल हैं, पर भारतवर्ष में तीर्थ-स्थानों की भरमार है। हमारे 'धर्म' का अर्थ बहुत व्यापक है और 'तीर्थ' का भी। जिस प्रकार अग्नि तत्त्व सर्वव्यापक है, परन्तु वह दियासलाई में शीघ्र प्रकट होता है, पत्थर की अपेक्षा लकड़ी में शीघ्र फैलता है और कपूर में तो अविलम्ब प्रकट हो जाता है, इसी प्रकार भगवत् तत्त्व भी सर्वव्यापक है, परन्तु तीर्थों में वह सुगमता के साथ प्रत्यक्ष हो सकता है। अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य को शीघ्र प्राप्त होता है और ज्ञानी, भक्त तथा संतों के हृदय में तो तुरन्त दृष्टिगोचर हो जाता है।

प्रस्तुत आलेख में तीर्थगुरु 'पुष्कर' की अनन्त महिमा का उल्लेख प्रस्तुत करने का लघु प्रयास किया गया है।

KEY-WORDS:-पुष्कर तीर्थ, पद्मपुराण

'तीर्थयात्रा' का हिन्दू संस्कृति तथा हिन्दू धर्म में प्रमुख स्थान है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में भगवत्प्राप्ति के मार्ग में सहायक किसी न किसी तीर्थ की यात्रा या दर्शन अवगाहन करके अपने जीवन को कृतार्थ करने का भरसक प्रयास करने के लिए लालायित रहता है। तीर्थों में ऐसा कौन सा तत्त्व है जिसके लिये यह त्याग परम्परा निरन्तर चली आ रही है। इसके समाधान के लिए यही कहा जा सकता है कि तीर्थ स्वयं देवता है। इसके तटों पर भगवत्प्राप्त संतजन भी निवास करते हैं। गंगादि दिव्य नदियां भी साक्षात् देवता होने के साथ-साथ भगवान से सम्बद्ध हैं। संसार में जितने भी तीर्थ हैं वे श्री भगवान व संतजनों के संग से ही तीर्थ बने हैं।

'तीर्थ' शब्द का निर्वचन करने पर 'ती' शब्द से 'तीन' व 'र्थ' से 'अर्थ' का प्रयोजन लिया जाता है, जिससे त्रिवर्ग (धर्म, काम, मोक्ष) या अर्थों की प्राप्ति या सिद्धि हो उसे 'तीर्थ' संज्ञा दी गयी। धन को छोड़कर जो यात्रा मे व्यय हो जाता है, धर्म, काम व मोक्ष की सिद्धि तीर्थदर्शन से प्राप्त होती है।

'तरति पापदिकं यस्मात्' अर्थात जिसके द्वारा मनुष्य पापादि से मुक्त हो जाय। वेदों में तीर्थों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी है। ऋग्वेद में तीर्थराज प्रयाग में स्नान-दान करने वालों को स्वर्ग-प्राप्ति की बात कही गयी है। इसी तरह पुराणों में भी तीर्थों की अनन्त महिमा गाई गयी है। व्याकरण शास्त्रानुसार 'तृ' धातु से 'थ' प्रत्यय करने पर 'तीर्थ' शब्द की उत्पत्ति हुई अर्थात् जिसके द्वारा तरा जाय। तीर्थ शब्द अनेकार्थक हैं, जैसे-देव, शास्त्र, गुरू, पुण्यकर्म और पवित्र स्थान। इन पवित्र स्थानों को हम श्रद्धापूर्वक देखते व पूजते हैं।

©SHARAD

वायु पुराण के अनुसार तीर्थों की संख्या साढ़े तीन करोड़ है। इतिहास, महाभारत व पुराणों का यह कथन है कि तीर्थाटन यज्ञों से भी बड़ा है-

ऋषीणां परमं गृह्यमिदं भरतसत्तम्
तीर्थाभिगमनं पुण्यं यज्ञैरपि विशिष्यते॥[1]

आत्मिक उद्धार ही तीर्थाटन का प्रयोजन है। तीर्थ तीन प्रकार के कहे गये हैं-जंगम, मानस व भौम। सदाचार सम्पन्न वेदज्ञ ब्राह्मण जंगम तीर्थ, सत्य, क्षमा, दान, दया, तप, ज्ञान, संतोष, धैर्य एवं धर्म व चित्तशुद्धि मानसतीर्थ तथा अयोध्यादि सप्तपुरियाँ एवं पुष्करादि तीर्थ भौमतीर्थ कहे गये हैं। जिस प्रकार शरीर में मस्तक आदि कुछ अंग पवित्र माने गये हैं उसी प्रकार पृथ्वी में कुछ विशेष स्थान पवित्र माने गये हैं। पद्मपुराणानुसार सृष्टि के आदि में 'पुष्करतीर्थ' नामक स्थान में वज्रनाभ नामक राक्षस वहाँ के नन्हें बालकों को मार दिया करता था। उसी समय प्रजापति के मन में यज्ञ करने की इच्छा प्रकट हुई। विधि ने विष्णु की नाभि से निकलकर अपने कमल के प्रहार से दैत्य का वध किया। जिस स्थान पर पद्म (कमल) गिरा वहां सरोवर बना, उसे ही 'पुष्कर' कहा गया।

पुष्कर तीर्थ सेवन का महान फल है। तीर्थ गुरू 'पुष्कर' के विषय में पद्मपुराण के सृष्टि-खण्ड में उल्लिखित है-

पुष्करे दुष्करो वासः पुष्करे दुष्करं तपः।
पुष्करे दुष्करं दानं गन्तुं चैव सुदुष्करम्॥[2]

पापों के नाशक, देदीप्यमान ब्रह्मा का एकमात्र मंदिर पुष्कर क्षेत्र में स्थित है। यह आदिकाल से सिद्धतीर्थ है। इसकी लम्बाई दस कोस व चौड़ाई दो कोस है। इस तीर्थ में जाने से मनुष्य को अश्वमेध यज्ञ व राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त होता है। पुष्कर तीन हैं-ज्येष्ठ (प्रधान), मध्य और कनिष्ठ पुष्कर। ज्येष्ठ के देवता ब्रह्मा जी, मध्य पुष्कर के श्री विष्णु तथा कनिष्ठ पुष्कर के देवता रुद्र हैं। मुख्य मंदिर पुष्कर का प्रजापति ब्रह्मा जी का है जहां पवित्र सरस्वती नदी प्रवाहित होती है। यहां सरस्वती का नाम प्राची सरस्वती है। पद्मपुराण आदिखण्ड में व महाभारत में कहा गया है कि कोई सौ वर्षों तक निरन्तर अग्निहोत्र की उपासना करे या कार्तिक पूर्णिमा की एक रात्रि पुष्कर में वास करे, दोनों का फल समान है। मर्त्यलोक मे यह ब्रह्माजी के नाम वाला एकमात्र तीर्थ त्रिभुवन में विख्यात है। यहाँ तीनों संध्यायों के समय प्रातः, मध्याह्न एवं सांयकाल मे दस हजार करोड़ (एक खरब) तीर्थ विद्यमान रहते हैं तथा आदित्य, रूद्र, मरूतगण, गन्धर्व, अप्सराओं का प्रतिदिन आगमन होता है। ब्रह्मपुराण में भी पुष्कर तीर्थ का वर्णन करते हुए यह उद्धृत किया गया है कि जो मनुष्य यहाँ पर श्रद्धा से इन्द्रिय संयम पूर्वक विधिवत् स्नान् करके देवताओं का पूजन अथवा पितरों का तर्पण करता है वह अश्वमेघ यज्ञ का पुण्य प्राप्त करता है।[3]

सिद्धतीर्थ पुष्कर में जो अजमैर से लगभग 9 मील दूर है, महायोगी मधुसूदन सदैव निवास करते हैं।

वे यहां 'आदिवराह' नाम से प्रसिद्ध हैं। इस मन्दिर में चतुर्मख ब्रह्माजी की दाहिनी ओर सावित्री व बांयी ओर गायत्री देवी का भी मन्दिर है। यहां पिण्डदानपूर्वक श्राद्ध करने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है। इस पावनतीर्थ में देवताओं व अनेकों ऋषियों ने इच्छानुसार सिद्धियाँ प्राप्त की हैं। महर्षि अगस्त्य व सप्तर्षियों का आश्रम भी इसी स्थान पर था। यज्ञ पर्वत के किनारे नागों की रमणीय पुरी भी यही स्थित है।

भारतवर्ष ने सदैव ही आध्यात्मिक विकास तथा आत्मिक उन्नति को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया है। यही कारण है कि हमारा साहित्य हमें अपने भीतर की सैर करने की शिक्षा देता आया है। प्रत्येक तीर्थ की स्थापना का कुछ उद्देश्य विशेष दृष्टि मे रखकर हमारे पूर्वजों ने अपनी ज्ञान-बुद्धि का परिचय दिया है। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि मर्त्यलोक मे तीर्थ दिव्यधामों की भावमय भूमि के प्रतीक हैं।

सन्दर्भ

1. महाभारत/वन पर्व/82/17
2. पद्मपुराण/सृष्टि खण्ड-19/45-46
3. ब्रह्मपुराण, तीर्थ वर्णन, सं0 2068 गीताप्रेस गोरखपुर पृ0 52-53